मौक्तिक

सम्पादक
मूलचन्द 'प्राणेश'



प्रकाशक
राजस्थान साहित्य अकादमी के सहयोग से
भारतीय विद्या मन्दिर शोध प्रतिष्ठान
बीकानेर (राजस्थान)

● प्रकाशक
राजस्थान साहित्य अकादमी के सहयोग से
भारतीय विद्या मन्दिर शोध प्रतिष्ठान
बीकानेर (राज०)

अनुक्रमणिका

प्रकाशकीय

'मौक्तिक' का यह प्रकाशन सोद्देश्य है। आजादी के पच्चीस बरस पूरे होने पर देश में देश भक्ति और सजनात्मक प्रवत्तियों का रूप रग देखना और तत्सबंधी गहरी अनुभूतियों की अभिव्यक्ति महज साँमा य बातें हो गई है। इसी सिलसिले म इन कविताओं का यह सकलन किया गया है। इनमें कई प्रकार के स्वर मुखर हुए हैं। दिशा-निर्देश भी हैं और बदलते हुए समाज के प्रति आस्था भी। नई प्रतिभाए अपना नया रग लेकर आई हैं। जो पुराने हैं, उनकी मजी हुई, परिष्कृत भावनाए नई पीढी का संबल बनगी, दोनों ही वरेण्य है।

मेरे सहकर्मी श्री मूलचन्द 'प्राणेश' ने जिस तत्परता और निष्ठा के साथ यह संपादन कार्य किया है वह सराहनीय है। श्री सूयशकर पारीक ने प्राक्कथन लिखकर इसका वजन बढाया है और कवियों का सही परिप्रेक्ष्य मे परिचय कराया है।

अकादमी ने अपनी संबद्ध सस्थाओं को यह कार्य अपने अपने क्षेत्रों के लिए सौंपा था। पाच सौ रुपये की धनराशि प्रस्तुत सकलन के लिए दी है। हम उनके बडे आभारी हैं।

बीकानेर
गणतत्र दिवस (१९७३ ई०)

सत्यनारायण पारीक
सचालक

प्राक्कथन

मौक्तिक हिन्दी एव राजस्थानी कविताओं का सुदर सकलन है। इसमे तेतीस कवियों की ४४ रचनाओ को समाविष्ट किया गया है। हिन्दी की २३,राजस्थानी की २१ एव सस्कृत की१ रचना इसमे स्थान पा सकी है। इसमे अधिकांशत उन कवियों की रचनाओं को स्थान दिया गया है जो या तो बीकानेर क्षेत्र क मूल निवासी हैं या जिन्होंने अपना कार्य क्षेत्र इस क्षेत्र को बना लिया है।

इसमे सम्मिलित प्राय सभी कविताओं का विषय राष्ट्रीय भावों व रूपात्मक अनुभवों से अलकृत है। राष्ट्र की जागृति के लिए तथा बराबर उस भाव को सजग बनाये रखने के लिए ऐसी राष्ट्र भक्ति पूर्ण कविताए जनमानस मे उस भाव सस्कार का सदव बीजारोपण करती है। सामाजिक चेतना के लिए भी ऐसी कविताओ का मूल्य बराबर बना रहता है। इसम सम्मिलित कतिपय जिन कविताओं का राष्ट्रीय भावो से अतिरिक्त भाव बोध होता है मूलत उनका भी राष्ट्रीयभाव पोषण करने का भाव ही है। चाहे वे मानवतावाद का परिपोषण करने वाली हैं और चाहे व राष्ट्र भाषा हिन्दी का समथन करन वाली। कुछ कविताए वतमान समय को व्यक्त करन वाली हैं जिनमे आक्रोश अथवा सदका तीव्र स्वर है तो कुछ कविताओं का स्वर सुखद भविष्य की मधुर कल्पनाओ से समन्वित है। ऐसी कविताओं म आशा और विश्वास के स्वर अधिक मुखरता पा सके हैं। कुछ कविताए बगला देश जसी जीवत घटनाओं का चित्रण करती हुई, नजर आती हैं। उनम वीरता की दुहाई बलिदानो की प्रशसा एव राष्ट्र को सदा सदा के लिए आजाद देखने की तीव्र कामना है। समन्वयवादी स्वर भी इन कविताओ म अपना निराला स्थान रखता है। हिन्दू हैं तो क्या और मुसलमान हैं तो क्या अतत सभी भारत माता की सतान हैं। तब भेद भाव कैसा ? गीता और कुरान उसी एक चिरतन सत्य का ही तो बोध करवाते हैं। जहा इस देश के रक्षक अर्जुन भीम जैसे धीर-वीर बलवान रहे हैं उसी के रक्षक अब्दुल हमीद कीलर और शैतानसिंह जसे निर्भय और अडिग वीर रहे हैं।

यह शौर्य की धरती है। यहां क्रांतियां पलती रही हैं। जीवन की बाजी लगाकर भी इस की शान रखना है—जय विजय के स्वर का सम्मान करना है। यहां के कवियों ने सदैव सिंधु राग का आलाप किया है। मौक्तिक का कवि भी बलिदानों की महिमा का बखान करता है—

तन मन धन सब करे न्यौछावर, चादर स्वाभिमान की
वीर प्रसविनी धरा पुण्य, यह धरती हिन्दुस्तान की।

भारत की पुरातन परम्परा है कि वह किसी को उजाड़ता नहीं बल्कि बसाता है, जुल्मों का प्रतिकार करता है। अभी पिछले दिनों जब मानवता के हत्यारों ने (वर्तमान बंगला देश में) कहर ढहाना शुरू किया तब हमारे देश ने ही उन पर गाज पटक कर गाजी को दुबोया, नियाजी को झुकाया और मानवता की पुनः प्रस्थापना की—

आपने कितने घर उजाड़े हैं
हमने उजड़े हुए बसाये हैं
तुमने बोये हैं पेड़ कांटों के
हम तो फसले बहार लाए हैं

और तभी 'मौक्तिक' का कवि आजादी को हासिल करने वाले का अभिनंदन करता है और कहता है—

शैतानों के जबड़ों में से लाई जाती है आजादी
मस्तक का मोल चुकाकर के पाई जाती है आजादी

× × ×

जो खून शहीद बहाते, उसका पार नहीं हो सकता है
मां बहिनों का बलिदान कभी, बेकार नहीं हो सकता है

यह देश हमेशा से लड़ना मरना और शत्रु को मारना जानता है परन्तु हार मानना नहीं जानता। यह धरती वीर प्रसूता है। इसके पानी में वीरत्व है। यहां धरती का मोल माथा देकर चुकाया जाता है। यहां कवि आजादी के प्रतीक तिरंगे में शहीदों का दर्शन करता है। साथ ही कवि को इस बात का पश्चात्ताप भी है कि जो भारत अपने पूरे परिवार का मालिक है किंतु उसकी संतान सुखी नहीं है। स्वाधीनता और पराधीनता में अंतर है किंतु उस

शासक और इस शासक की मौज मस्ती मे कोई अतर नही है।
पराया और यह स्व है। मौक्तिक का कवि आज की छलना और प्रवचन
स भी अत्यत दुखी है। श्यामपट्टो एव पोस्टरो पर आदर्श वाक्य लि
हुए है किन्तु काय उसके विपरीत किया जाता है। कवि गांधी का स्म
स्मरण करता है और उनके अनुयायियों पर व्यग्य कि वे उनके आदर्शों पर
कितना चलते हैं। और इसीलिए एक कवि ने इस बात को अलमना की है
कि जिस राष्ट्रभाषा हिन्दी को महात्मा गांधी चाहते थे वह अपने ही घर
म प्रवासिनी हो रही है। और इसीलिए एक कवि ने मायड भासारै सिर
जणहारो र नाव अपने विचारो को अभिव्यक्ति दी है। 'मौक्तिक' का कवि
जहा प्रकृति वणन म अपनी अनुरागात्मकता रखता है वहा वह सभी के लिए
मगल कामना करता हुआ भी दृष्टिगोचर होता है— मरणै री भूख जियो,
जिण आजादी न कायम राखो बा तरवार जिओ   बीरा री बडक जियो'
और प्राणै री प्यास जियो जसे प्रयोग हृदय म सम्मोहन उत्पन्न करते है
तथा कानों का सरस।

इसीलिए हम धरती का मोल अनमोल है—

हूं धरती रो माल   पायल   दुममीरी मोवात नही
रगत सीच रहे वेल बधाई, कोरी थोथी बात नही

यहां का कोई कवि इतिहास रचने की सुन्दर भावाभिव्यक्ति करता
है तो कोई यह मायिकार कहता हुआ भी सुनाई पड़ता है कि आजादी
प्राप्ति क बाद जो जो काण्ड हमारे देश म हुए है, वे कम नही है। आज हम
पतन पर्थों पर बढ़ रहे है किन्तु कवि यह भी स्वीकार करता है कि अभी शोषण
म मुक्ति पाना है। कोई कवि जीने के लिए मरना साधना का पाठ पढ़ाता है।
कोई कह रहा है—नारावाजी निरथक है श्रमनिष्ठ बनो। किसी कवि के
स्वर म निरतर गतिशीलता का आग्रह तो किसी को अभीष्ट है—

कण कण से आवाज आ रही, हमे चाहिए एकता

मौक्तिक का एकमात्र सस्कृत कवि अनेक मगल कामनाओं के साथ
उद्बोधन के स्वर में माना जीवन के त्याग की ओर सकेत करता है। तो
कोई अपनी रचनाओं के साथ प्रकृति सस्कृति के गीतों का उद्गाता बना हुआ
है। किसी किसी कवि का स्वर सभी भावों का वाहन करता नजर आता।
दन मौक्तिक इस प्रकार लघु सकलन होता हुआ भी अपनी अपनी दि..
क कवियों के भावबोध का प्रतिनिधित्व करता है।

—सूर्यशंकर पारीक

श्री प० विद्याधर शास्त्री

लक्ष्यस्परस्पावनम्

स्वात न्यखलुभारतस्य जगता
स्वात न्यरक्षाकरम्
सर्वेषाहितसाधकम्प्रतिपद
विश्वात्मस तपणम् ।
नित्य नि न्धनमोन्नति जगति सा
सद्भिजनै गण्यते
लोकाना हि सुखस्थिति वत यया
जायेत दु खान्विता ।

लोकेऽस्मिन् परिपूयते परमिद
लक्ष्य हि ननु स्वत
नित्य यस्यकृते तपो मुनिवरै
पूर्वं कठोर कृतम् ।
त्याज्य सम्प्रति सौख्यवृत्तिजनक
भोगात्मक जीवनम्
तत्तत् माव्य सुसाधनाय सतत
स्थेय सुसज्जेस्तथा ।



• श्री शम्भूदयाल सक्सेना

भारत-गीत

सरिताओं का देश हमारा यहीं हंस होते हैं
यहीं ओढ़ कर हिम की चादर शैल शिखर सोते हैं
किरणों का किरीट माथ पर यहीं वन धरते हैं
पुष्प राशि से लता कुंज सब यहीं गोद भरते हैं

झरनों के अविरल प्रपात में करती स्नान शिलाएं
यहीं बैठ दो घड़ी जगत से हम मन प्राण जुड़ाएं
कमल कुमुद से भरे सरोवर तारा छाई रातें
यहीं चन्द्रकर शिशिर कणों से करते चुपचुप बातें

यहीं इन्द्र धनु रचता दुर्लभ मेघों की मनुहारें
श्यामल श्याम कुंजों में गाता मीठी मंजु मलारें
ऋषि-मुनियों की पुण्य भूमि यह मृग मोरों का घर है
पग पग मंदिर, प्रति मंदिर शुचि लिये देवता वर है

विश्व वंद्य यह देश कि जिसके सागर चरण पखारें
सन्ध्याएं आरती उतारें, शुक्र दीप कर धारें
साम गान था हुआ यहीं पर सोम पान कर करके
इसी देश के कंकड़-पत्थर से गंगा जल ढरके

उपनिषदों को इसी भूमि में धर्म-कर्म फूले
सम्मृति झूलों यहीं डाल कर ऊंचे-ऊंचे झूले
मातृभूमि का गौरव गरिमा वेद पुराण पुरातन
विमल हृदय-स्रोत से कलकल बहता अविरल जीवन



ओ मेरे देश !

ओ मेरे देश
मेरे जीवन
मेरी मुस्कान
तू मेरा सब कुछ
मेरे अभिमान ।
बह रही शीतल हवा
मिला आमोद
अडिग हिमगिरी
रक्षक खडा विशाल
ग्रौर दैत्याकार
भाखडा'-'नागल'
'चबल' बाध
तुझ में ही
अविराम चलती
गगा की पावन लहर

कर स्नान जिसमें
भक्त के
क्लेश जाते बिखर।
और कहीं
राजधानी से कुछ ही दूर
यमुना किनार
'ताज' की है गोद
स्नेह है तुझसे
मिला मुझे अगाध
तेरे ही वक्ष पर
'भिलाई'-'चित्तरंजन'
आदि कल कारखानों की
चिमनियों से निकलती
श्रम की धूप
ओ मेरे देश
तेरे हैं विविध रूप।
हास्य रुदन
सब कुछ मेरा
तुझ पे कुरबान
ओ मेरे देश
मेरी मुस्कान
तू मेरा सब कुछ
मेरा अभिमान।
दिवस हो या हो अंधेरी रात
बस मुझे केवल
तेरा ही ध्यान

हैं कोटि कोटि
तेरी सतान
'ग्रजु न' 'भीम'
धीर वीर वलवान
गाधी'- गौतम'
नेहरू' के अरमान
पाट कर भेदभाव की खाई
हटा रहे ऊच नीच की
दीवार ।
ग्राज भी पौरुष,
नही झुक पाया है
जागता है हर खेत पर किसान
ग्रौर सीमा पर
बर्फ से दबी
घाटियो मे
हर घड़ी चौकस खड़ा है
'ग्रब्दुल हमीद', 'कीलर'—
'शैतान सिंह' बन कर
निर्भय—ग्रडिग
तेरा हर जवान
ग्रो मेरे देश
मेरे जीवन, मेरी मुस्कान
तू मेरा सब कुछ
मेरे ग्रभिमान ।



भारत माता की सतान

हम हिंदू हम मुसलमान भारत माता की सतान
नही जानते भेदभाव हम सबका हम करते सम्मान
गाधी'— गौतम की भूमि पर
प्यार सदा पलता है
सत्य अहिसा लिये अडिग
यह स्नेह दीप जलता है
मदिर मस्जिद— सभी एक हैं
गीता वही और वही कुरान
हम हिंदू हम मुसलमान
भारत माता की सतान
कितने युग बीत और आये
फिर भी हम बलशाली
गगा यमुना की धरती पर
ईद वही और वही दिवाली
एक सदा है मजिल अपनी
होठो पर खिलती मुस्कान
हम हिंदू हम मुसलमान
भारत माता की सतान।

धरती हिन्दुस्तान की

वीर प्रसविनी धरा पुण्य, यह धरती हिन्दुस्तान की ।
लुटना हो गर गौरव इसका, वो वेला अभियान की ।।
ओ भारत के वीर सपूतो !
अपनी निद्रा त्यागो,
शत्रु द्वार पर आ जाये तो
जागो, जगाओ, जागो,
यह वह धरती है जिसके खातिर, बाजी खेलो प्राण की ।
वीर प्रसविनी धरा पुण्य, यह धरती हिन्दुस्तान की ।।

तुम सब वे हो जिहोंने ही,
इस की आन रखी है
काट जुल्म की सीमाए,
अपनी शान रखी है,

बोल उठे सब कोटि-कोटि स्वर जय-विजय सतान की।
वीर प्रसविनी धरा पुण्य यह धरती हिंदुस्तान की॥

यह वह धरा है जहा वीरो ने
सवस्व अपना त्याग दिया
भारत मा के बेटो ने-
जिस के हित बलिदान दिया

तन मन धन सब करे योछावर चादर स्वाभिमान की।
वीर प्रसविनी धरा पुण्य यह धरती हिंदुस्तान की॥

आतंकित जब हुई धरा सो,
फली जौहर ज्वालाए,
जोश म आए बच्चे लेकर-
कुर्बानी की मालाए,

परवाह नही तब करत कोई, भले बुरे अ जाम की।
वीर प्रसविनी धरा पुण्य यह धरती हिंदुस्तान की॥



चलना है अगारों पर··

चलना है हमको जलते अगारो पर
राहो मे काटे बिछे, आधिया आए
हम शूरवीर तूफानो मे मुस्काए
यह शौर्य की धरती, यहा क्रातिया पलती
सम नाशक की ज्वालाए, नित यहा पर जलती
जिम्मेदारी है आज कणधारो पर
चलना है हमको जलत अगारो पर

है कौन धरा पर हमे रोकने वाले
हम धीर वीर हैं अल्हड मतवाले
हममे सागर सी है अथाह गहराई
नदियो सी गतिमान जिन्दगी पाई
अभिमान हमे है सद सस्कारो पर
चलना है हमको जलते अगारो पर

हम देश प्रेम मे ओत प्रोत दिल वाले
हर कदम कदम पर तूफान उठाने वाले
हम जल्लादो को मजा चखाने वाले
हम अभिमानी को धूल चटाने वाले
विश्वास नहीं हमको मिथ्या नारो पर
चलना है हमको जलते अगारो पर ◆

धरती की अंगडाई

इस धरा न ली जो अगडाई
आसमा ने थे फूल बरसाए
जब सिपाही बढे थे सरहद पर
चाद तारे भी देख मुस्काए ।

लहरें उठती थी गगा यमुना म
किसन रोका है उस रवानी को
देश पर जो जान देते है
सिर झुकाया है उस जवानी को।

कितने डूबे जहाज पानी में
क्या हुआ हाल तेरे 'गाजी' का,
कितनी फौजों ने हार मानी है
सिर झुका दिया नियाजी' का ।

हो मका जितना हमने समझाया
आपके ही ये जुल्म सारे हैं,
कितनी मासूम इज्जतें लूटी
कितने वीरान ये| नजारे है ।

आपने कितने घर उजाड़े हैं
हमने उजड़े हुए बसाए हैं,
तुमने बोए हैं पेड़ काटों के
हम तो फसले बहार लाए हैं ।

अब भी वक्त है सम्भलने का
इस हकीकत को आप पहचानें,
अक्ल अपनी ही काम आती है
इस सदाकत को आप गर जानें ,



सोए राग जगाओ साथी

सपनो म क्या खो जाते हो
विपदा म क्या घबराते हो
बुझते दीप जलें क्षण भर म ऐसा साज सजाओ साथी
सोए राग जगाओ साथी ।

क्यो चलते हो तुम मन मारे
सोते हो क्यो पाव पसारे
अगर वेदना छा जाए तो दुबलता मत लाओ साथी
सोए राग जगाओ साथी ।

तुम गाओ तो धरा गगन हिल जाए
भूले भटके राही को मजिल मिल जाए
रुको नही तुम बढे चलो अब मरुस्थल को सरसाओ साथी
सोए राग जगाओ साथी ।

कम - क्षेत्र से हटो न राही
मजिल दूर नही है राही
अधकार का चीर बढो तुम, भारत स्वग बनाओ साथी
सोए राग जगाओ साथी ।



म्हारो देश

ओ धिन भाग म्हारो
हू ईं देश गे जायो
म्हान इण भोम सू घणो हेत
गाऊ तेजो, बीजू खेत
भाग मनाऊ
बो दिन कणँ आवै
इण रै खातिर
आ म्हारी लाडी जान जावै
इण मायड रा लाल
इण रै खान्रि
बणिया काळ।

इण जुग रो इतिहास बणायो
पृथ्वी' से इंदरा' तक आयो
इण भारत रो माण
सारै जग छायो
इण वीरा रो गान
सारे जग गायो
जो आयो शरण म ईं री
ओ बणग्यो तन-धन रो सीरी
जब बिलखतडा देख्या टाबरिया
इण मायड़ रै थण सूं
दूधा री धारा बहग्यी
भारत मा र आग
जिण न शीश भुकाया
रोटी कपडा माण
सभी कुछ पाया
पण जिण रो मन खोटो,
मनसोबो खोटो
वार तो रहसी—स्वर्गों ही टाटो



हेमाळो

भारत रै बच्चै बच्चै नै, म्रो प्राणा स्यू प्यारो है ।
भुवया न झुकसी हेमाळो म्रो राजस्थानी नारो है ।।

लडणो जाणा मरणो जाणा
मर जाणा हा मारणो
दुसमण री छाती चढ जाणा
पण ना जाणा हारणो

म्है राणा सीवाजी, म्हारो खून घणो खारो है ।
भुवयो न झुकसी हेमाळो, म्रो राजस्थानी नारो है ।।

ई न मांगणिय री हाणी
द गा'टपां री ताडगां
धोलांना हाथां स्यूं म मिण
वीरां प्राण निवाडसा

गागमीर माटे रा निशियां री मान्यां रा तारा है ।
भुवयां न भुरसा हेमाळा ओ राजस्थानी नारो है ॥

इण धरता र पाणा म हा
वीर वर्ण री जाण है
जनम सूरमा न दय नित
आ वीरां री खाण है

मोनहल्या व माल धुकाय ओ मिनखा रा धारा है ।
भुवयो न भुरसा हेमाळा ओ राजस्थानी नारो है ॥

मणिगिणती री सुरवानियां ही
राखी इण री लाज है
हिन्दू मुसलिम सिख इसाई
स रै सिर रा ताज

ओ भारत री ढाल इयै न सब धरमा री सारो है ।
भुवया न भुरसी हेमाळा ओ राजस्थानी नारो है ॥



गाव

आ गावडले री बात, बावळा, चमक चादणी रात
कोई गीतडलो गावँ रे, मन भरमाव रे
कुहुक कुहुक कोई कोयर तर्ने खोली बाहूँ रे
भरिया खेळो कोठा माथें, छागा लावें र
पावें ऊठ बकरडी गाय, गोवि दो गाडीणा ले जाय
लुगाया लाखो गावेंरे, मन भरमाव रे
आ गावडले री बात ......
ऊची ताण मचाण, गोफणी बावँ हाळी रे
बाहा मिगली छाव, कर खेता रूखवाली रे
मिऊजो छाछ गवडो खाय, गोरडी मन ही मन मुळकाय
घूघट में सरमावें रे, मन भरमावें र—
आ गावडले री बात ..
धान भरी छाटघा न देख, टाबरिया नाच रे
अमल गळतो देख, गोरडी मेंदी राचें रे
भूम लोग लुगाया-सार मनावें दीवाळी त्योहार
भिग मिग ज्योत जगावें रे, मन भरमावें रे
आ गावडले री बात, बावळा चमक चादणी रात
कोई गीतडलो गावँ रे, मन भरमावें रे।

दीपक सा जलता अन्तरमन

दीपक सा जलता अंतरमन
साधक सा पलता ये जीवन
मैं पला कुटी के आगन मे महलो की किंचित् चाह नहीं
शूल सहारे मेरे मुझको फूलो की परवाह नही
जो पतझर को पनपाने दे, बेजुबा धरा को गाने दे—
जो बिकी बहारो की बगिया तक, रुकते जिनके पाव नही
मैं उनकी सासो का सरगम
दीपक सा जलता अंतरमन

मेरे तप का सूरज तो, हर ग्रह मे गौरवशाली है
इस धरती के पात्र सभी, तारो से वैभवशाली है
जा बलहीनो को सम्बल दे, मा वसुधरा को 'चम्बल दे
ग्रो सावन दे दे उन पडो को, जिनकी जजर डाली है
मैं उनके सपनो का सावन
दीपक सा जलता अ तरमन
साधक सा पलता ये जीवन

वो मेरे सग क्या चल पायें, जिन्ह किनारे भाते होगे
वो मेरे सग क्या चल पायें, जा भझा से घबरात होगे
जो तूफानो से खेल सके, जो वडवानल का भेल सके
ओ'राह नही मिलने पर, खुद, अपनी राह बनाते हो
मैं मेहनतकश का मन भावन
दीपक सा जलता अ तरमन
साधक सा पलता ये जीवन ।



ऊंचो उड म्हारा नवल तिरंगा

ऊंचो उड म्हारा नवल तिरंगा लहर लहर म्हारा नवल तिरंगा
ऊंचो उड म्हारा विजयी झण्डा
छप्पन कोड थारा गुण गावै ।

थारे तार-तार में लाग्यूं अमर शहीद निजर आवै
गांधी, तिलक सुभाष रवी न्दर टूळा मूळा मन हरसाय ।
आखो जग थारा गुण गावै ।

मां रे थाळ दूध गरीमा, धोळा रंग रंग लाव
अमन चैन रो शंख बजा कर जीवण जोत जगा जावै
आखो जग थारा गुण गावै ।

हरी खुमी हरियाली हीरयो नु वो सदेशो मन भावै
हरित क्रांति रा मू घा हीरा हळ सूं खोदै सो पावै
आखो जग थारा गुण गावै ।

जननी जलमभोम री ममता है ऊंची मां ममभावै
देस धरम री आण बाण पर केसरिया भल अपणावै
आखो जग थारा गुण गावै ।

चक्र सुदर्शन परम तेजरो बुद्धि मे बळ बरसावै
गरजै वीर सुण जद गोला रण जीतै, जग जस छावै
छप्पन कोड थारा गुण गावै । ◆

आ रहा नूतन

धैय धर, सन्निकट निश्चय ही सवेरा
क्रूर कर्मा कृष्ण वदना क्षीण त वो
यह तमिस्रा सास अतिम गिन रही है
तरुण प्रेता की जवानी, राज सत्ता
देख वह प्रतिक्षण निरतर छिन रही है
क्षय-तमीचर तारकाओ की प्रभाए
आसुरी माया विगत, मृततम सपेरा—
धैय धर, सन्निकट निश्चय ही सवेरा ॥ १ ॥

जो यहा स्थाणु स्वय को मान बैठे,
देख तो भू कम्प उनके आसनो मे
बदलते क्या देर लगती, चल जगत मे
मिट रहा इतिहास, बदलते शासनो मे
जो मरुत के साथ, वह कसे अचल है !
क्राति-रथ के चक्र का ही प्रथम फेरा—
धैय धर सन्निकट, निश्चय ही सवेरा ॥ २ ॥

गमित की उर पार स्यर की गोद दरियां —
श्यामल म दिन्ना कुराना का गिरगन
पलटत फरमान कुत्सित कामना म
नित नए होन धामिन दूषित प्रशासन
पर न म ाम य सरामी गाप ाग
प्रकट होना तपन जलता तमस घेरा—
धय धर सन्निकट निश्चय ही सवेरा ॥ ३ ॥

फड़फड़ाता पन्न सग फूल कालिकाए
ममरित झुरमुट मग्न तरु गाह सार
कुररी कण्ठा न मलापा राग भरव
ताम्रचूड़ो न मटक लुप्त पगोच्चार
घुल रहा नभ रक्त धारा ये सलिल म
दिग दिग तो म भगा जाता अधेरा
धैय धर सन्निकट निश्चय ही सवेरा ॥ ४ ॥

एक सरसी क निगामी सहज साथी
कमल विकसित कुमुम्न लुठित गत विभव है
उल्लुओं चमगादड़ों के पलक झपके,
क्योंकि नवयुग सजना का यह प्रसव है
आ रहा नूतन जहा तू मैं न मेरा—
धय धर सन्निकट निश्चय ही सवेरा ॥ ५ ॥



• डा० मनोहर शर्मा

बूढो भारत

लाठी रै स्हारै
घूजतो घूजतो
सडक मू परै
यो डोकरो
चाल्या जावै है
चुपचाप ।
इ री माथो
क्यु तो बुढाप सू
अर क्यु चिन्ता सू
भुक्याडा है ।
यो याद करै है
ग्रापर उएा दिना न
जद यो जुवान हो
ग्रर इ री भुजावा मे
बळ हो ।

अब
बुढापै सूं औ बेगा
आपर परवार री
माटी रूला
ई री माथा
मारी फर मत्यो है—
बेटा-पोता सूं
भरयाईं घर सूं
धणखरा मिनख
नागा भूखा
रुळता फिर है।
कई इसा भी नायक निसरया
जै आपर मना म
स्वारथ रा भाठा पूज है
अर ई जीवती जागती
मूरत नै बार काढ दीनी।
अब ई र तन पर
उतरयोड़ा गाबा है
अर पेट मे
मांग्योड़ी रोटी है।
अब यो न महाभारत है
न भारत है
बस थारत है।



• डा0 मनोहर शर्मा

स्वाधीनता रो सुख

स्वाधीनता अर पराधीनता मे
भोत घणो फरक है
सुरग अर नरक रो आंतरो है ।

पैली भारत पराधीन हो—
विदेशी शासक परजा नै लूटता
अर आपरो घर भरता ।

आज भारत स्वाधीन है—
दनी शासक परजा न लूट है
अर आपरा घर भर है
शासक पैली भी सुरग म हा
अर आज भी सुरग म है
परजा पैली भी नरक म ही
अर आज भी नरक म है।
तो पछ स्वाधीनता अर पराधीनता म
फरक काई रयो ?
साची कैयो है—
भेड पर ऊन कुण छोड है ?
अब भारत री जनता न
भेड रूप छोडर
सिंघ रूप धारण करणो पडसी
स्वाधीनता रो सुख
भेड कोनी भोग सक
यो आनद तो वनराज ई
ले सक है।



• *श्री सूर्यशंकर पारीक*

आजादी री ऊंची गादी

बरबादी ता स'लीनी पण, आजादीनै कदे न छोडी
आजादी नै खोसणिया री, पकड मोवडी फेरी ठाडी
अथवा लडियो मरियो कटियो, पण बैरी रै कदे न सामै-
थक कर ततो टेकी गोडी

ज्यूं कर बरी सामैं आया
हरख्यो पण ! तू हुयो न कायो
भोपा ज्यूं छाया छिन चढियो—
उपण्यो जोस काया न मायो

देही लो अरपण मर भोगी, मा धरतीनै देई माना
जे उण वानो किणी ज मापधा, पजाळी सो माग बान्या-
र, धरनो ग त प्रभमानी

जि दगानो नै मेल हथाळी
सामै चाल्या मौत निमाणी
दूधा-पूना साजा राखी—
मोभी वेटो हुय ममराणी

रण भोमा म सूत दुधारी, वरी न लाहा वर नाख्यो
लडो रयो पगमाड निसरडा भायो हूं बचना म भाख्यो

का लै काळ पग नी रोप्यो
कुण रोप? त जेहो कोप्यो
भाजादी रा तू रखवाळो—
मोहो बीज धरण त साप्यो

पैलानै पैला तै काढया, म्हसना खिरता नी भाजादी
साल भाज सावळसर भायो, देखी है जद भाज बावळा —
भाजादी री ऊंची गादी।



श्री मोहम्मद सदीक

आजादी

मानव मानीजो ला कोनी !

मिनखा रो लाजे मिनख पणो
धरती पर बोझ सवायो है।
इण मा धरती रे माथ पर-
काजळ सो दाग लगायो है ॥

पशुआ रो आछो पशुपणो
कद पशु पणं ने लाज है,
म्हे मिनख पणे ने लाज रचा
पशुआ मे नाम डुबायो है।

पुरखा री लाज राखणी है।
मत पडो लडो झूझो दुख स्यू
नर होकायर ना नाम धरावो थे
थे धीरज रा धणी धणा
नारा री पाय मे आवो थे।

मिनखा रो मोल मोळ मे है,
थे गिरता पडता आखडता
निठ नेड सी आ लाग्या हो
खाल्यो पीलो बस मोज करा
आ थे के ले भाग्या हो।

दिन फिर गया रातां बीतं है
सूरज रो तेज पड़ग्यो फीको।
बायरयो सोग मनाव है
ए तारा तर तर ऊठ गया
जोवण री श्रास ! मीचली आस

सत्या रो सांचो सत टूटग्यो
मिनखा र मूं छ होव कोनी
ब बीतं युग री बातां है
सत हो सत्या रो माथ मानवी
मूं छां हाळा घणा होया—

दिन धोळ धाड मानवी री
धनमान लूटण म लागी
थे फाळ चूक ग्या लागो हो
म्हे देख रया भागा भागी—

मत धोळ फूलिया बणो घणा
धोळ पर दाग घणो आवं
मिनखा रो मान बढावण री
बाता रो ध्यान घणो श्राव

कुरबानी रो बलिदाना रा
कुण मोल चुकावण चाव है—
श्रायो है घिरतो बायरयो
थामो तो थमसो जाव है।

बाळक सी हानी टावर सी,श्रा हिंद देसरो श्राजादी
श्रा सोरी सी कोनी ल्हादी ॥



• श्री सावर दईया

सुरक्षा के सन्दर्भ मे

सुरक्षा कवच बन कर खट
इनेक आउट को भेदती
आसमान की ओर मु ह किये खडी
प्रकाश रेखाओ के साथ
जुडे अस्तित्व को
कब तक समझाते रह
सिफ बातो से ?

इन दिनो आदमी
पानी या दूध की जगह
मिट्टी का तेल क्यों पीने लगा है ?
क्यो लबी और लबी हो गई वे पक्तिया
जहा नागरिको की विवशता का
मजाक उडाया जाता है ?

देश के लिए काम आने वाला पैसा निगलती
ये सूअरनुमा आकृतियां
भामाशाह के वंशजों की
यह गधाती नस्ल
कब तक जीवित रहने दें ?—
जो रेजगारी पिघलाती है
चवन्नी को
रुपये में बदलती रहती है।
दिनरात—
अनाज भरे गोदामों पर
आउट आफ स्टाक की
तख्तियां लटकाय रखती है

खून नहीं हिम्मत चाहिए' के बराबर
रक्त दान कीजिये के पोस्टर पर
कीचड़ उछालते मस्तिष्कों के मूतक
कब तक सुनते रहें ?
और कब तक खुले रहने दें वे मुंह
जो जन समूह का मनोबल गिराने की
अफवाहें फैलाते हैं ?

सिनेमाघर की कहानी रातों में
घरों में लगे बिस्तर छोड़ कर
अंधेरी गलियों में
घूमने वाले नवयुवक
लावारिस आवारा क्यों हैं ?

मुनाफाखोरों की बढ़ाई हुई
महंगाई को लात मार
एक दिन का वेतन कटवाने वाले
कर्मचारियों के कंधे
सीमा पर युद्ध-रत सिपाहियों के कंधों से
कैसे मिले हुए नहीं हैं ?

हमारा एक मन्तव्य
एक विश्वास
एक स्वर
एक लक्ष्य
विफल बनाने वालों को
इतिहास जब माफ करेगा
तब करेगा
फिलहाल हम
हिसाब चुकाना
कब तक स्थगित रखें ?
-- ---? ---?--- ---?



• श्री भरत व्यास

वाह रे म्हारा डोकरडा

'वा' न घा चिन्ता घणी, थारो इक बेटो 'ऊन" गयो
थे गया, घणा बिगड्यो सारो, म्हे लिख-लिख कर हारघा खरडा
रे वाह रे म्हारा डोकरडा ...

थे तो थारै जीवण नै, सीधो साधो जीकर अमर हुआ
पण गैल पून जो छोड गया बे घर मे पड्या रवै सामा
य छाया ले न सबयो काई भो, इण थारी परछायी की
'ठाकर' बण कर ठसकै सारा, बारात सजी है नाई की
थे थान तो भगवान बणा कर, आप बण्या मब ससारी
दारू पीवै जूआ खेलै, या कहरघो 'पद्मो" पसारी
जो थारी 'लीक छोडदी तो मर ज्यागा सब मरडा-अरडा
रे वाह रे म्हारा डोकरडा...



श्री रामनाथ व्यास 'परिकर'

लारला पच्चीस वरस

वरम वै
वात्योडा
म्हारा
जिका जिया
म्हा—
भारत रा
दीन दुखी
भारत रा
ऊजळा
पणखरा
धू घळा
दीठपट माथै
जम्योडा
मटमैला सा'व— –
उठता पडता
टोपा पसीने रा
टोपा रगत रा

भारत मैं
लिलाड सू
झरता
खिण खिण
गतिमान !
देस रै
हरस रा
सोग रा
अणजाण्या
व बरस
घर घर
धूजता सा
तणता सा
टूटता
तिणखला ज्यू ।

(२)

जलम री

वैनीतारा
हाल ई
सुणीज है—
झेलम र पार
जमना र पार
हेमाळ र
भर
सिखरा माथ
हम री सिलाया
दीस है
टूटती
मूरती रा
दोनू हाथ कटाया
थीनस द मलो
टूटघोड मिदर री
खड खड
श्रेक मूरत जिमा
पडी वा
भारती
भूली बिसरी
सास्कृतिक
गफलत म
गुदळीज्योडी
दोनू पसवाडा
कटाया हा
हेमसिला रा

भर
गळ पगा
घाव दागू
बगन र पटट
पटाया हा
पटगो ही
गरी गाई ।
जिरा बरोबर
हुई गरी
भोर गेरी ।
(३)
गीध बैठो फूचरतो
माग र सिदूर न
रवतो रयो
पिगळतो नित
सुकेसी वा
कास्मीरी घाटिया म
रगतो तिरग चीर न
घणो गरो लाल ।
रगत सागी
हिमसिला री माग मे
जमग्यो हो थोडी ताळ
राजनीतक
जुवो कूटनीतक
जमगी सतरज
मो रा बण गया

पानी ...
बिक गया सम्मान
म्हारी
बजपनो
घिर गई पाळी
मन
हमा
थाइ धाट माथी
रा रिया
म्हारो
जवाहरलाल !
बिध गया हाथा
बिना घर
क्या रहे मन
ाप बिगड़ा दीवना !
र
म्या माथा
मजगर रै जवाड़ा म ...
मातोरिबद्धक फौज
म्हारी
बारिया मे
और
वागो मे !
हुय गया हो
सरव
सूनो

आँख माथै
निगोरो
पेमरयो
हौ ...
घेर मापर
गाय पीळो !
(४)
हुई रचना
फेर पाछी
स्पूत री
जद गीध थूरग्या
घणा गरा पाव नै ...
पूरातर बाल मू
गीध नै टुकड़ा मिल्या,
पार गीव रै
बदळगा
नित रयो पैरो...
सस्त्र अमरीकी मिल्या
सगत रा हुवता रया
नित नुवा
सत्र-परीक्षण
बाळ रो
रिसड़ा
भयानक रूदर चैरा !
हानता विग्यान
मर पेट

उडग्या वै नैंट ।
भगनवरसा म घघरता
पडण लाग्या जट ।
कपट र वातावरण म
सभ रोप्या म्हे सडा
त्याग अर बळदाण सागै
भगनमुख सू जा भिडया
सस हो सम्मान म्हारो
प्रगट हो बळदाण म्हारो ।

(५)

भले भगडा सू पक्योडो
पडग्या पाकस्तान
स य सत्ता री बघारी
घणी थोथी सान
कुतै री हाडी रयो
रिमनी रिसानी घाव
दमन री हा पराकाष्ठा
डूबती रयी भवर म
भरथ भासा भेम री बा नाव –
प्राण मोल्या मिरगल रा
जुद्ध रै ध्याम
भूखिया बा भेडिया
उठग्यो भारत
बग भू रो बचावण
सम्मान
फौजबळ सू राक्सा न
जा गड्डघा
घर
बगला दस रै
यो मुगत रण म
दैम री रण मन्नी
हो तोड नाग्यो
विसम घेरो
बरघा हा
परभाण ।

(६)

राज अर समाज म हो
व्यापतो व्यामोह
घोर सकट री घडी ही
मायनो विद्रोह
राजनीतक पुनरचना
सगत रो नवरूप
दळा म बटाया
सुवारथ, ईसक सू
पडग्या भाध कूप
बदळत जुग री
बदळनी चावनावा
भोर जन री चेतनावा
नव विचारा रो
नु वो उद्घोस
नुव मूल्या रो
हुयो प्राक्टय ।

मनावण व व्रत
पिरताग्यावा
री प्रवचन
बीस बरसा री
कहाणी— —
कठे समता !
कठे क्षमता !!
अब हलचल उठी
आर्थिक बा
पुनरचना
नव प्रयोगा री
ग्रामतभरी री
रक क्रिया री
य गयी
ख्वात।
ष्ट्र जनमत
।गयो जाग्रत
भोर
बीत्या दो दसक हा
आत्मग्लानी र अधारै म
कापता सो
हाफता सो
ुण अर विदोण सो
ी दप
ाळ रो बन्ळो
ार उडीक्यो

परीक्षत रो सप
फण तण्या खडो है —
हरण लागो धु ध
चीत्कार। उठ रयो है
हिमसिलावा धूजती जावै
ओर नवयुग रो
किरण रो जाळ
भेदतो जावै विसमता
मन्द्र वधता चरण
है योडा सकै मे ।
सजगता है
राष्ट्र मानस मे
ओर
करवट ले रयो है
जवान भारत— —
लैर है
उछाव री
फैरती जाव
पता का
राष्ट्र रथ माथै —
वा है
नव जागरण री
फूठरी वेळा !

गाधी री लाडली

स्वतत्रता प्राप्ति के पच्चीस वर्ष है
और—
मेरा बेचारा निस्सहाय देश है
जिसको न निज भाषा है
न अपना वेश है।
बच्चो का बहलाने क लिए
यह गाधी के 'सपने' बेचता है
किताबो म
स्वतत्रता या आजादी' के अर्थ म
चारपाई' की जगह
बेंठ पर लेट कर

'फ्रडम' देखता है
ख्वाबों मे
गा थो ।
जिसने कहा था—
'हिंदी भारत की तो क्या !
एशिया की राज्य भाषा हो सकती है'
के जनाजे पर
इंगलिश का कफन डाला था इसने
उसकी आखें बंद होते ही
यह निरंकुश हो गया था
उसकी ममतामयी बेटी को
अनाथालय भेज
एक अंग्रेज की बेटी को
पाला था इसने
और आज तक—
उसे कुतर्कों के इंजेक्शन लगाता
उपचमता
चुचकारता
सवारता
जवान करता रहा है
'हिंदी'
जब-जब भी आई संसद की—
चौखट पर
उसको इंगलिश मे भौंकने वाले
ब्रिटेन के कुत्तों से
कटवाता

चिढ़ाता
अपमान करता रहा है।
और आज तक
भारत की एक अनाथ जवान
पचास वर्ष की बेटी
लाल किले के बाहर
सड़क पर सोती है
राष्ट्रपति भवन की स्वामिनी
मम देश पार की निवासिनी
हो रही है
गांधी!
मुझे और मेरे देश को क्षमा करना
तेरी पुत्री आज
अपने ही घर में प्रवासिनी हो रही है।



श्री भवानीशंकर व्यास 'विनोद'

चेतना री खतावणी

पौ फाटी री उजास
भोर रै सुपना नै चचेड़ै,
बीरी गोदी मे बैठो सूरजे टाबर
चिड़कल्या रै मूढै बोल
सुख भर नींद पोढणिया
अंधार री खतावणी छोड'र
आगै आवो
अर थारा नुवा खाता खोल'र
दिन री वही मे दो आंक बधावो।
जूनी वात्या रा
पिण्ड सरावण स्यू
यादा रा गुटका पीवण स्यू
ऊगतै सूरज रै घोड़ा री रासा
किया थमसी ?

सिझ्या रै बिखरियोड़ सि दूर सो
भोर रो मुट्ठी भर उजास किया मिनसी?
सूरज री भणदेखी करियां
तावड़ री जाजम नी साटी ज
गरुड पुराण वांचणिया स्यूं
जलम रा नारेळ नी बाटो जै।

नु वी पीढी रै होठा माथ
टाकीजियोड़ा आखर
नु वा अरथ चितेर
पीढीया र आतर स्यूं
भासा री खल भाड़
अर बीन गेरी दिस्टी री
रगड स्यूं चिलकाव।

कदास बुसबुसिजियोड़ा आखर
मु ढो खोल नैं की बोल
तो जुगां र गूं गै दरद री
की पिछाण तो हुव
पोली धरती माथ नाठियोड़ा
गीता रा निसाण तो हुव।

वखत री ब्याकरण रा
अरथ बदळग्या
जूना पढियोड़ा सवनाम विसेसण क्रिया
थाक'र सूयग्या
मानख री चीलख आख न
गरा अरथ सूभ

आनै रै आतरै स्यू
गैरो गोनो लगाव ।
बखत रै पाणी मे तिरतो इतिहास
गोताखोर ज्यू चिब्बी लगाय'र
मायला बात काढ लाव
अर बीन बवत पाणी म गलाय र
आपरा गामा पैराय देवै ।
पण ममाणा रो पाडोसी
अधगावळो बखत
हालताई
नु वी जि दगी रा पगलिया
माडणा चावै
अर बूढी अगरख्या
झगला टोपी मे समाणी चाव
बान क दो ।
थारै टाकी टाकणा री घडाई पूरी हुई
अब बखत र टाबा क्यू लगावो ?
यडी करती चेतणा नै
पगलिया लेवण द्यो
गलै बंवत बदळाव र
हुडी क्यू लगावो ?
थारी बांचोजियोडी पोथी न
उथळना रो
नु वा आखरा री पोडी क्यू पकडो ?
जीवत सराध करणा हुवै तो करल्यो
बना पोडी रा गीत अबै कठै ?

रळी रा गुटका पिया
वा सागो मिठास कठ ?
चेतणा म पीढ्या रो ग्रांतरो है
ग्रबै इन कुण पाट ?
सुरग विसाइ लेवण हाळो बोगारी
जि दगी रा नु वा थान किया साटै ?
विखरत मळ माथै क्यू फिगरावा ?
खिडत खेल म क्यू बिलमावो ?
बखत री एक ठोकर खाय र
आ बोदी चौपाळ ढ जासी
इरी वणघट मिट जासी
बोखो वाण्या र ळळता किस्सा र'जासी।



पर इतना सस्ती नही खून से सिंची हुई ये आजादी।
देवाम्रा का दिल चीर धार से खिंची हुई ये आजादी॥
शम्राना के जबडो मे से लाई जाती है आजादी।
मस्तक का मोल चुका करके पाई जाती है आजादी॥
पूरा का पूरा राष्ट्र जाग कर करवट जभी वदलता है।
तब जाकर दुनिया म कोई सा बगला देश ज मता है॥

जब मागो का सिदूर जाय तो धरती सिदूरी होती।
जब मा बहिना का प्यार जाय तो कुर्बानी पूरी होती॥
जब फौलादी सीने होते तो स्वय मुट्ठिया तन जाती।
जब शत्रु सीशा पीते हैं तो कई क्रानिया हो जाती॥
फौजी नगी तानाशाही खुद फिरती जान बचाने को।
पद्रह करोड बाजू उठत जब जब आजादी लाने को॥

जिस समय क्रांति क चेहरे पर नूतन रौनक चढ आती है।
उस समय दरिदो के खातिर लाखों कब्रें खुद जाती है॥
जब जब ऐमा माहौल बने, पत्थर भी आग उगलता है।
तब जाकर दुनिया म कोई सा बगला देश ज मता है॥

जब बगला देश जन्मना है, दानवता स्वय चरमराती।
तानाशाही भाग फौजो दामन का फासी लग जाती॥
उस समय दरि दो क सार अरमान सिसकिया भरते हैं।
सूनी पजा वाल जीवन की भीख मागने फिरते हैं॥

जो खून शहीद बहाते, उसका पार नही हो सकता है।
मा बहिनो का बलिदान कभी बेकार नही बन सकता है॥

ऐसा कुर्बानी करने पर ही तो ये बगला देश बना।
लाखो लोगो के बलिदानो का खून सना परिवेश बना॥

पद्रह करोड मुट्ठिया तनी, शोषण साम्राज्य मिटा डाला।
जब पूर्व दिशा के मानचित्र से पाकिस्तान मिटा डाला॥

जब जब ऐसा भूचाल उठे भट्ठी मे भाव धधकता है।
तब जाकर दुनिया मे कोई सा बगला देश जन्मता है॥

लो नौ महिनो की रात गई नूतन प्रभात उग आया है।
ढाका का है सौभाग्य आज फिर बगला ध्वज लहराया है॥

सपने मुजीब के सत्य हुए, वे सपने थे आजादी के।
वे सपने अब्राहम लिंकन के, वे सपने थे गाधी के॥

इतिहास बन रहा था उस दिन जब फौजी तर्पण करते थे।
वे एक लाख पाकिस्तानी जब आत्म समर्पण करते थे॥

वे एक लाख शैतान जिन्होने भीषण नर सहार किया।
वे एक लाख हैवान जिन्होने निर्दोषो पर वार किया॥

ललनाओ की अस्मत लूटी अपना मुह काला जहा किया।
उन एक लाख दरिन्दो ने छोटे बच्चो को भून दिया॥

लेकिन इतिहास साक्षी है, उन सबने घुटने टेक दिये।
सोलह तारीख दिसबर को हथियार सामने फेंक दिये॥

जब अत्याचारी दहल जाय, शोलो का जोश दहकता है।
तब जाकर दुनिया मे कोई सा बगला देश जन्मता है॥

इसलिये नवादित राष्ट तुम्हारा कोटि कोटि अभिनदन है।
पचपन करोड भारत वासी मिलकर करते अभिवादन है॥

यह जीत हुई मदिर मस्जिद गिरजाघर औ गुरुद्वार की।
यह जीत हुई है राम रहीम ईसा अल्ला के नारे की॥

यह जीत पूण मानवता की हो हमे दिखाई देती है।
यह जनता की आवाज विश्व म साफ सुनाई देती है॥

यह सच्चाई सच्चाई है जनता का निणय पूरा है।
अब सत्ता सदा के लिये पाक आधा है और अधूरा है॥

जब जब जनता में ज्वाल उठे, ज्वालामुखी आग उगलता है।
तब जाकर दुनिया म कोई सा बगला देश ज मता है॥



• श्री दीनदयाल ओझा

साच री जोत

कर सकै काई अंधेरो जगत मे
साच री जे जोत हिवडै मे जळै ।

पग धूड रा काचा हुवै है बावळा
नाव कागद री तिरै ना नीर मे
बात कैवण सू सरै नी कामडा
मीत वो जो काम आवै पीड मे
जिण हृदय भरियो सुधारो कळस तो
गरल उण हिवडै बता क्यू कर फळै ।
कर सकै काई अंधेरो जगत मे
साच री जे जोत हिवडै मे जळै ।

चदण भुजगा सग रव रात दिन
भावना खुन री कद छोड नही
लाख दु स सव सदा ही सत जण
पण सुपथ सू पग कद मोड नही
जिण हृदय सावण बरसियो हेत रो
ठोड लू वा बता क्यू कर पळै
कर सक काई अधेरो जगत म
साच री ज जोत हिवड म जळ ।

अभिमान री वातां उता कद तक रैव
जिण हृदय म भाव प्रगट ग्यान रो
कुण कर अपमान आय मनख रो
जिण घरा है भाव सुभ स मान रा ।
सद्भाव रा सागर जठै भरिया पड्या
दुर्भावना उण ठोड आ कर क्यू कर ढळ
कर सक काइ अधेरो जगत म
साच री ज जान हिवड म जळ ।

क्यू चिलमना तू फिरै है बावळा
हेत री नदिया बवा भाव सू
रम रा धागा न न्हाखो रूस तू
धार सुम सरिता निरख तू भाव सू
जिण ठोड मळ चाव नित रितुराज रा
उण ठोड न पतझड वता कीकर पळ
कर सक काई अधेरो जगत म
साच री ज जान हिवडै म जळै ।

श्री दीनदयाल ओझा

अभिनव शृंगार

पग पग पर मुझको मत रोको ठुकराओ
वर्तमान के जीवन का तो मैं अभिनव शृंगार हूं।

इस दुखियारी धरती को जीवन देने हित
मैंने सुख से गरल पान स्वीकार किया
पथ पथ पर बिखराने फूलों की कलियां
जगती के शूलों का नित शृंगार किया
जी भर अब सहने दो बाधा मत डालो
मैं उजडे पथ का बिसराया प्यार हूं
पग पग पर मुझको मत रोको ठुकराओ
वर्तमान के जीवन का तो मैं अभिनव शृंगार हूं।

गमी दुःना का बांधा आंसु की रज्जु म
इसीलिए कि कोई बोझ न बिखराए
छिपा लिया दुःख साथ। मैंने दबा पाना।
इसीलिए कि कोई बूँद न गिर पाय
जलने दो मुझको मत रोको ज्वाला म
अधियारी राहों का मैं आधार हूँ
पग पग पर मुझको मत रोको ठुकराओ
वर्तमान के जीवन का तो मैं अभिनव श्रृंगार हूँ।

दुःख की सौगातें भीतर म ही सजा सजा
बदले म सुख की सौगात उपहारी है
प्राणों को संकट की राहों म पथरा
बदले म जीती बाजी निज हारी है।
बहने दो मुझको मत रोको इन धारा म
मैं दुखियारा नदिया का अभिसार हूँ
पग पग पर मुझको मत रोको ठुकराओ
वर्तमान के जीवन का तो मैं अभिनव श्रृंगार हूँ।

खूब सुनी बात धरती की जीवन भर
पर कोई भी आज न मेरी सुनता है
बिखरा ज्ञान बटोरा झोली म कण कण कर
पर कोई ना आज हृदय म ही गुनता है
मुझ भटकन की राहों म बंधन मत डालो
बिसराये सत्यों का मैं सुख सार हूँ
पग पग पर मुझको मत रोको ठुकराओ
वर्तमान के जीवन का तो मैं अभिनव श्रृंगार हूँ।



र 'मनुज'

घटनाओं के फल

महमूता के भीषण
ज्वालामुखी के मुख से
फूट पड़ी निगूढ़ परिभाषाओं
की ज्वाल
ज्ञान के कीचड़ से, दब गई
मैगन की बुलंद आवाज
और
उठा ऐसा बवाल
जल गई
राख की ढेरी में
सत्यता की टांग

आगन छोड कर
सुहागन गगा ने किया
अग्नि स्नान
और
सिर पर मूढ हिमालय
एठ गया अकड मे
निबु द्ध ज्ञान म
चटकती चिगारियो से
पुरातन विश्वास
मृत समाया है
इशारा से हो गय
विस्मित
समाधान का सामान ले
थके मादे चि तन का
कारवा
हो कुण्ठा मे भ्रमित
पहुचा सजाने, सवारने
बसाने
महाज्ञान की
वस्ती
अस्त व्यस्त धरती तल पर
नव कोपल से
उग गए
पराजित खण्डहर ।
शाश्वत जग के इन सूचको
को दिया नाम

सभ्यता नश्वर
चिन्ता मे शेष, थे जो
अहमृता के
रजकण
सिमटकर ले लिया
उन्होंने
थोथा निर्णय
युगदर्शन का
मगर
ये सभी सम्भावनायें हैं
घटनाओं के
फल
जो
आज भी है
और है
कल।



• *श्री शिवराज छगाणी*

समै भागतो जावै

निमघो निमधो
जळ चानणो
बिजळी माळ खम्भा माथै
सड़क पड़ी सरणाट
मिनख रो कोनी खास जायो जाम
मिनख पण री छूट रयो है
मोत्या जड़ी लगाम
अड़ोळो जीवण आळो घोड़ो
भाग इगगो बिणगी
दिशा बिसरग्यो
दशा बिगड़गी
अर
बिगड़ायो भीट तन रो घाण
मिनख न मिनख सावण न ललचावै
कीकर आवै पाण
कापतो सम भागतो जाव
दिशावा सगळी थाम न पाव ।

◆

• *श्री शिवराज छंगाणी*

मायड-भासा रै सिरजणहारा रै नाव

पळ पळाट करता सोनलिया
आखरा माय
मायड भासा रा सिरजणहारा रो नाम
इतिहास रै ऊजळ पाना माथै
माडीजै
इँ
सिरजणहारा माय
सोवणा सपूता री बेलि फळ फूलै
प्रिथ्वीराज री
वेलि क्रिस्न रुकमणी री'
सूयमल्ल मीसण

दुरसा आढा अर कृपाराम
राजिया रा दूहा'
अर
हाला झाला री कुण्डलिया'
अर
'बाता ख्याता सू भरयोड़ा
भडार अखी र सी
आ मायड भासा
जयमल, दुरगा, पत्ता
परताप अर पन्नाधाय
मीरा अर करमा रै
सनेव सू सीच्योडी
सुवटिया मेरिया कुरजा
अर
पपइया र लोक गीता रा
सुरली धुना सू सवारयोडी लाग
अळगोज री तान माथ
माड सिरखी, राग
मीठी मिसरी सी आवाज
जिकी च्यानणी रात म सुवावणी लाग
मोन्‍ळा वरसा सू
भामा री गगा वै बै
जिकी ववण दो
छोछालदर करण वाळा
दळ्ळ दरा न
सरप वाळो फण

प्रवस दोखमी
कुरसी रै चिपक्योड़ चोचडारै–
माथ
डा डी टी पोडर छिड़काइजसी
चमचार भीया, जून किल री
तरिया ढहसी—
पापी परम्परावारा लेवडा
उखड़सा
लेखण री धारा
निरमळ भावा रै सागै
चवनी रसा
इण धारारै माम
कद अडियळ रोडा
मटक्याअर अटकसी ?
लेखणी रा स्याही
मत सूखण दो
सुतत्तर भावासूं
चाल ज्यूं ई चालण दो ।



है सुन्दर ससार

नित राजस्थान जियो

सुख जियो हजारां बरस खुशी सूं राजस्थान जियो
मैं जियो देसरा मिनख और भावी संतान जियो

आ जमी जियो, आकाश जियो आ दरखत-रूख जियो
मन में धोरां री धरती पर मरणै री भूख जियो
नित छाछ जियो, नित जियो बाजरी झुक झुक खेत जियो
ऊंठां बैल्यां रै हेठैरी म्हारो ऊजळी रेत जियो

चूं कूं केसर रै रंग में, डूबी भाई बीज जियो
रूखारी हीडा पर बैठी सावण, री तीज जियो
इण माघ फाग रै महीणां मे होळी रो राग जियो
जुग जियो पोमचो मरवण रो, ढोलरी पाग जियो

जय वर्मा, राजस्थानी कवि

जागै सोयो ज्ञान जी

ारत रो सोनलियो सूरज, सिखरा चढतो जावैलो
ममता री गोदी मे पळियो, समता रा गुण गावैलो

ामगण मायड स्यू भी बेसी जिण धरती नै माना जी
अणहूतो आ लाड लडावै सगळा मन मे जाणा जी

ो आगळ भी धरती म्हारी, दुसमी छीन न पावैलो
कूडो हक्क जताणियो जुल्मी बिना मौत मर जावैलो

ओ धरती रो मोल आकलै दुसमी री औकात नही
रगत सीच म्है वेल बधाई, कोरी थोथी बात नही

पार यार हाथा स्यू जद, भिलकै वण जाव कधी
चावै जितनो माण मारलै छूट न पावै बा' कधी

मनरगी किरणा ज्यू धुळकै, सूरजियै मा खोगी रे
बीया हो मोकळी जातिया, भारत भेळै होगी रे

सेळ भेळ री हूणी खाई रळमिल सगळा भरदेस्या
हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, इसाई, खुद नै भारतीय केस्या

न्यारा न्यारा बण्या देवरा, न्यारा हो भगवान जी
पळै भावना "लोह एक्ता", जागै सोया ज्ञान जी



• *श्री सरल*

दो कविताएं

[एक]

निरभ्र आकाश
दरकती धरती
उल्टी पड़ी पेट की मटकी
कहते हैं अकाल पड़ा है
अकाल पड़ा! अकाल पड़ा!!
अच्छा
बड़ी प्रतीक्षा बाद
स्वांग का समय मिला
आओ
तुम भी आओ
हम सभी मिलकर
अब देवताओं का अभिनय करें
इतिहास रचें

[दो]

पहुचना होगा
किसी एक शिखर पर
जिंदगी या मौत
किसी एक के घर पर
निरर्थक है
प्यार या परमात्मा
याने आदमी की जात ।
अनिर्णय के प्रदेश में
परिभाषायें खो जाती हैं
निर्णय की स्फटिक शिलायें ।



स्वाधीनता रजत-जयन्ती वर्ष

पच्चीस बरस पहले हमने
की विदा गुलामी की दशाल ।
है बात बडी हम मना रहे
यह आजादी का रजत साल ॥

इस काल में हमने भारत को
मेहनत से खूब सवारा है ।
उत्पादन और बढाने में
अब ऊंचा हाथ हमारा है ॥

जो कुछ अब तक हम कर पाये
वे काम हैं कोई कम नही ।
भारत से फिर टकराने का
रहा दुश्मन मे भी दम नही ॥

हम खड़े हमारे पैरो पर
यह बात गर्व से कहते हैं।
मुहताज नही हम औरो के
चाहे जो सुख दुख सहते हैं॥

पर अभी बहुत कुछ करना है
आर्थिक मुक्ति पानी है।
समता का युग लाने खातिर
निर्धनता हम मिटानी है॥

जो आजादी का लाभ उठा
स्वारथ मे अंधे हो चूके।
दो नम्बर का धन जोड जोड
फिर भी लाखो के हैं भूखे॥

उन इने गिने कुछ लोगो के
चान्दी के हो गये महल खडे।
जब कि भारत के कोटि सुत
नंगे भूखे हैं आज पडे॥

उनके मन मे कटु पीडा है
धुआ भी है, चिनगारी है।
झुलसाने वाली लपटें है
जो नही किसी से हारी हैं॥

जिनका जो सकना दूभर हो
उनको मरने से क्या डर है।
बढ गया देश उनके बल पर
जिनके ना धरती पर घर हैं॥

श्री बुलाकीदास बावरा — मार्फत श्री धनसुखलाल पुरोहित
सूरसागर के पास बीकानेर (राज०)

श्री भंवरलाल छजलानी — म० पो० नियातरा (बीकानेर)

श्री भंवरलाल सुथार 'भ्रमर'
ईदगाह बारी के बाहर बीकानेर (राज०)

श्री भरत व्यास — भरत भवन
५ ब्रूस रोड विल पार्ले, बम्बई ५५

श्री भवानी शंकर व्यास 'विनोद' — प्र० अ०, फोर्ट उ० मा० विद्यालय
बीकानेर (राज०)

श्री मकबूल अहमद 'अमिताभ' — मुहागा का मा स्ता भट्ड बाजार,
बीकानेर (राज०)

डा० श्री मनोहर शर्मा — शार्दूल संस्कृत विद्यापीठ क्वाटर
रानी बाजार बीकानेर (राज०)

श्री मालचन्द लहगावत — बीकानेर (राज०)

श्री मूलचन्द 'प्राणेश' — चौखूंटी गजनेर रोड बीकानेर (राज०)

श्री मोहन आलोक — १४१ एच० ब्लाक, श्रीगंगानगर (राज०)

श्री मोहम्मद सदीक — राज० सिटी उच्च माध्यमिक विद्यालय
बीकानेर (राज०)

श्री योगेश्वर 'मनुज' राजस्थानी
द्वारा श्री अटल दीपक, मूंधड़ा बगीचा
गंगाशहर रोड बीकानेर (राज०)

श्री रामदेव आचार्य अंग्रेजी विभाग
राजकीय महाविद्यालय, करौली (राज०)

श्री रामनाथ व्यास 'परिकर' सहकारी प्रशिक्षण महाविद्यालय,
वृत्त विनास मंडल, कोटा-१ (राज०)

श्री वल्लभेश दिवाकर रतनबिहारी जी पार्क के सामने,
बीकानेर (राज०)

श्री प० विद्याधर शास्त्री संपादक विश्वंभरा नागरी भंडार,
स्टेशन रोड, बीकानेर (राज०)

श्री विशनलाल 'मतवाला' सुथारों की बड़ी गुवाड़ बीकानेर (राज०)

श्री शम्भुदयाल सकसेना एजूकेशनल प्रेस फड बाजार,
बीकानेर (राज०)

श्री शिखरचन्द्र कोचर अवकाशप्राप्त जिला एवं सत्र न्यायाधीश
कोचरों की गुवाड़, बीकानेर (राज०)

श्री शिव पांडे बीकानेरी हनुमान हत्था, बीकानेर (राज०)

श्री शिवराज छंगाणी नत्थूसर गेट के अन्दर, बीकानेर (राज०)

श्री श्रीकृष्ण विश्नोई भ० प० जन उच्च माध्यमिक विद्यालय
बीकानेर (राज०)